ये मायने नहीं रखता कि आप कहां से आए है, मायने यह रखता है आप कहां जा रहे है।
– अज्ञात

महबूबा मुफ्ती भी रिहा

किसी स्वतंत्र और संप्रभु देश में संसद के किसी फैसले से अगर आपका विरोध है तो अपनी बात देश के सभी संभव मंचों पर रखने का रास्ता आपके सामने खुला है। इससे कुछ भी हासिल होना तो दूर, आप पहले से अधिक अलग–थलग पड़ते जाते हैं।

ममता तिवारी।।

14 महीने की गिरफ्तारी के बाद आखिर पीडीपी अध्यक्ष और जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को भी रिहा कर दिया गया। पिछले साल 5 अगस्त को अनुच्छेद 370 के खात्मे के जरिए जम्मू–कश्मीर को मिला विशेष राज्य का दर्जा खत्म करने के फैसले के बाद उन्हें कश्मीर के कई अन्य राजनेताओं के साथ गिरफ्तार किया गया था। उनकी रिहाई के साथ ही जम्मू–कश्मीर में मुख्यधारा की पार्टियों के सभी प्रमुख नेता रिहा हो चुके हैं। राज्य के सभी राजनीतिक दलों और व्यक्तित्वों ने इस रिहाई का स्वागत किया है। हालांकि खुद महबूबा ने काफी तीखेपन के साथ दोहराया है कि वह नई दिल्ली द्वारा कश्मीर के साथ की गई कथित ज्यादती का विरोध जारी रखेंगी। यह बात अन्य कश्मीरी नेता भी दोहराते रहे हैं। हाल में फारूख अब्दुल्ला के उस बयान को लेकर खासा विवाद भी हुआ जिसमें उन्होंने कथित तौर पर चीन के सहयोग से अनुच्छेद 370 और 35–ए को वापस हासिल करने की बात कही थी। हालांकि नैशनल कॉन्फ्रेंस ने बाद में इस बात का खंडन करते हुए कहा कि उनके बयान को गलत ढंग से पेश किया गया, लेकिन फारूख अब्दुल्ला जैसे बड़े कद के नेता को अपने बयानों में ऐसी किसी गलतफहमी की गुंजाइश भी नहीं छोड़नी चाहिए। किसी स्वतंत्र और संप्रभु देश में संसद के किसी फैसले से अगर आपका विरोध है तो अपनी बात देश के सभी संभव मंचों पर रखने का रास्ता आपके सामने खुला है। इससे कुछ भी हासिल होना तो दूर, आप पहले से अधिक अलग–थलग पड़ते जाते हैं, साथ में दोनों देशों की आपसी कड़वाहट को और ज्यादा बढ़ाने की भूमिका भी निभाते हैं। बहरहाल, नेताओं की बयानबाजी को एक तरफ रख दें तो भारत सरकार के सामने यह स्पष्ट होना चाहिए कि कश्मीर को लेकर उसकी चुनौतियां अब बदल चुकी हैं। अनुच्छेद 370 से संबंधित फैसले को एक साल से ऊपर हो चुका है और कश्मीर में शांति बनाए रखने का तात्कालिक दबाव समाप्त हो चुका है। अभी मुख्य चुनौती कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल करने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को दोबारा शुरू करने की है।

इतना तय है कि पिछले एक साल से कश्मीर की जो स्थिति है उससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की कोई बहुत अच्छी छवि नहीं जा रही है। पाकिस्तान अगर कश्मीर को लेकर कोई बयान देता है तो उसे खास तवज्जो नहीं मिलती, लेकिन संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग जैसे मंचों से उठते गंभीर स्वरों की ज्यादा समय तक अनदेखी नहीं की जा सकती। कश्मीरियों का सुकून भी कश्मीर में शांति जितना ही जरूरी है। इस सीमावर्ती क्षेत्र के लोगों का मन अशांत रहना विदेशी ताकतों का काम आसान कर देता है। इसलिए पहली जरूरत है कश्मीरियों का विश्वास जीतने की, और यह काम संवाद बढ़ाकर ही किया जा सकता है।

बेहतर हो कि आ रहे जाड़ों में सीमावर्ती क्षेत्रों में जमी बर्फ का फायदा उठाते हुए सरकार कश्मीरियों के साथ अपने रिश्तों में गरमाहट लाए ताकि आपसी विश्वास को एक नई जमीन मिल सके।

वैदिक घड़ी

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

कुछ दिनों पहले मुझे इस प्राचीन घडी का चित्र प्राप्त हुआ जिसमें १ से १२ अंकों के स्थान पर विभिन्न देवताओं के नाम लिखे थे। वो एक अबूझ पहेली की भांति थी किन्तु अचानक गौर करने पर मुझे इसका रहस्य समझ में आ गया। मैं इसपर पहले ही एक लेख लिखना चाहता था किन्तु उससे पहले इसी प्रश्न को मैंने अपने फेसबुक पेज पर भी लोगों से पूछा और हमारे एक पाठक श्री तरुण विश्वकर्मा ने इसका सही उत्तर भी बताया। तो अपने इस लेख में मैं तरुण जी का भी योगदान मानते हुए इसका शुभारम्भ करते हैं। ये सभी देवताओं अथवा गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं और जिस स्थान पर वे हैं उनकी संख्या भी उतनी ही है। इनमें से १२ आदित्य, ११ रूद्र एवं २ अश्विनीकुमारों की गिनती हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध ३३ कोटि देवताओं में की जाती है।

संपादकीय

बड़े कदम की दरकार

चुनौतियां भी बहुत सारी हैं। जैसे यह कि हमारे स्कूल कॉलेजों में शिक्षा का स्तर क्या उतना उन्नत है, जितना इसे होना चाहिए? फिलहाल आर्टिफिशल इंटेलिजेंस में नौकरियों की कमी होने के कारण युवकों को आकर्षित करना मुश्किल है। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर बड़ी पहल करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक स्तर के जैसे विशाल संस्थान हमें चाहिए, उन्हें पैदा करने में हमारा रेकॉर्ड अधिक अच्छा नहीं है। फिर भी भारत में संभावनाएं हैं कि अगर वह आज बड़ा कदम उठा लेता है तो बीस–पचीस साल बाद जब आर्टिफिशल इंटेलिजेंस हमारे जन–जीवन, कारोबार, सरकारी कामकाज, सेवाओं, उपकरणों आदि में दबदबा जमा चुकी होगी तो उनमें से बहुतों में लिखा होगा– मेड इन इंडिया, प्रॉसेस्ड इन इंडिया या फिर पावर्ड बाई इंडिया। इसकी बड़ी वजह यह है कि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में जितनी विशाल संभावनाएं हैं, उस मुकाबले में मेधावी और कुशल लोग उपलब्ध नहीं हैं। इस मामले में भारत बड़े लाभ की स्थिति में है। उपरोक्त सम्मेलन में जिस सत्र का संचालन मैंने किया उसमें यह निष्कर्ष निकल कर आया कि भारत में कुशल पेशेवरों की उपलब्धता, डेटा की प्रचुरता, कनेक्टिविटी की सुगमता, युवा पीढ़ी की बहुत बड़ी संख्या, सरकार के जोश और भारत के प्रति दुनिया के भरोसे के कारण हम वाकई छलांग लगा जाने की स्थिति में हैं। यह ऐतिहासिक मौका है। इसे पकड़ लें या गंवा दें, हमीं को निर्णय करना है।

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का मतलब मशीनों (या प्रौद्योगिकी) के भीतर इंसानों जैसी ही सीखने, विश्लेषण करने, सोचने, किसी बात को समझने, समस्याओं का समाधान करने, निर्णय लेने आदि की क्षमताएं पैदा हो जाने से है।

खुशी और डर

बालेन्दु शर्मा दाधीच।।

भारत के सामने करीब–करीब उसी तरह का अवसर मौजूद है, जैसा आज से दो–तीन दशक पहले चीन के सामने मौजूद था। उस मौके का पूरा फायदा उठाकर चीन ने अपना कायाकल्प कर लिया और दुनिया का 'मैन्युफैक्चरिंग हब' बन गया। अभी भारत दुनिया का 'आर्टिफिशल इंटेलिजेंस' हब बन सकता है। इस हफ्ते भारत सरकार के सूचना और प्रौद्योगिकी विभाग की तरफ से आयोजित रेज–2020 नाम से एक विशाल वैश्विक सम्मेलन हुआ जिसमें सैकड़ों विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया और लाखों लोगों ने उसे ऑनलाइन देखा। हालांकि इसका थीम 'सामाजिक रूप से उत्तरदायी आर्टिफिशल इंटेलिजेंस' था, लेकिन ज्यादा फोकस इस बात पर रहा कि क्या भारत दुनिया में पैदा हो रहे इस अद्भुत अवसर का लाभ उठाकर सामाजिक–आर्थिक तरक्की की नई ऊंचाई हासिल कर सकता है।

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का मतलब मशीनों (या प्रौद्योगिकी) के भीतर इंसानों जैसी ही सीखने, विश्लेषण करने, सोचने, किसी बात को समझने, समस्याओं का समाधान करने, निर्णय लेने आदि की क्षमताएं पैदा हो जाने से है। जब मशीनें इंसान जैसी क्षमताएं पा जाएं तो खुशी भी होती

है और डर भी लगता है। खुशी यह कि हमारे पास ऐसी मशीनें होंगी जो अनगिनत इंसानों के बराबर काम कर डालेंगी, वह भी बेहतर क्वॉलिटी के साथ। डर इस बात का, कि फिर इंसान का क्या होगा? वह क्या करेगा और कैसे कमाएगा–खाएगा? सबसे बड़ी बात यह कि सोचने–समझने में और अपना काम खुद करने में सक्षम मशीनें सदा–सदा तक इंसान के काबू में बनी रहेंगी, इस बात की क्या गारंटी है। उनमें से इक्का–दुक्का ने भी कोई बड़ा कारनामा कर दिखाया (जैसे कहीं बम गिरा देना या किसी प्रणाली को ध्वस्त कर देना आदि) तो हमारा और इस दुनिया का क्या बनेगा।

बहरहाल, इतना तो तय है कि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस की वजह से हम ऐसी मशीनें और प्रणालियां बना लेंगे जो इंसान का काम आसान कर देंगी। सारे काम तेज रफ्तार के साथ तथा बेहतर ढंग से करेंगी। ये संसाधनों पर होने वाले खर्च को बहुत कम कर देंगी और कारोबारी फायदे को बहुत बढ़ा देंगी। जैसे, इंसानों द्वारा चलाई जाने वाली एक फैक्टरी में रोजाना एक हजार स्कूटर बनते हैं लेकिन अगर वही फैक्टरी आर्टिफिशल इंटेलिजेंस द्वारा चलाई गई तो शायद वहां इससे दस गुना स्कूटर बनने लगें और कामगारों का खर्च घटकर दसवें हिस्से पर आ जाए, यानी 10: प्रतिशत खर्च पर 1000: परिणाम। मैं जानता हूं कि आपके मन में क्या सवाल आएगा। वह यह कि हमारा देश तो कामगारों और किसानों का देश है। अगर इसी तरह कामगार बेरोजगार होते रहे तो फिर बेरोजगारों की इतनी बड़ी फौज खड़ी हो जाएगी कि देश की अर्थव्यवस्था वैसे ही डूब जाएगी।

आपका डर अनुचित नहीं है लेकिन अब इस हफ्ते के सम्मेलन पर लौटते हैं, जिससे बात थोड़ी स्पष्ट हो जाएगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम भारत को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का ग्लोबल हब बनाना चाहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हम सिर्फ अपने यहां ऐसी मशीनों, तकनीकों, सेवाओं और उत्पादों का प्रयोग करने तक सीमित नहीं रहेंगे। हम उनका निर्माण और विकास पूरी दुनिया के लिए करेंगे। यह हमारे लिए उतनी ही बड़ी मजबूती बन सकता है जितनी चीन ने मैन्युफैक्चरिंग में हासिल की। चीन की ही तरह भारत में भी श्रम सस्ता है। लेकिन चीन के विपरीत, भारत बेहतर गुणवत्ता के लिए जाना जाता है।

सूडोकु नवताल- 5504

कठिन

	8	5						
3								
			6			7	4	
6			2		4			
1								8
			7		5			3
	4	7			1			
								6
						5	2	

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5503 का हल

4	3	9	2	6	8	5	1	7
8	1	6	7	4	5	9	2	3
7	5	2	3	9	1	6	4	8
1	7	5	4	2	6	8	3	9
6	4	3	8	5	9	2	7	1
2	9	8	1	7	3	4	5	6
5	2	1	6	8	7	3	9	4
9	8	7	5	3	4	1	6	2
3	6	4	9	1	2	7	8	5

अपना ब्लॉग

आर्थिक कायाकल्प नहीं हो जाएगा?

मोहन। आज चीन जिस तरह से छोटी से छोटी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीज का विनिर्माण कर रहा है, उसी तरह अगर हम आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अपना दबदबा बना लें तो क्या हमारा आर्थिक कायाकल्प नहीं हो जाएगा? हमें याद करना होगा कि इनफोसिस के पूर्व सीईओ विशाल सिक्का ने क्या कहा है। उन्होंने कहा कि अगले 20 से 25 साल के भीतर आर्टिफिशल इंटेलिजेंस भारत में बहुत बड़ी खलबली पैदा करने की क्षमता रखती है। आज ऑटोमेशन के कारण लोग जिस तरह से नौकरियां खो रहे हैं वह तो उस समय के मुकाबले कुछ भी नहीं है। लेकिन चूंकि हमारे पास समय है, हम अपने आपको उन हालात के लिए तैयार कर सकते हैं। अगर हम आर्टिफिशल इंटेलिजेंस को अपनी शिक्षा प्रणाली के साथ इस तरह जोड़ लें कि बहुत बड़ी संख्या में इस काम में कुशल पेशेवरों को तैयार कर सकें तो फिर पासा पलट सकता है।